पाठ्य सामग्री 22-04-2021

स्नातक प्रतिष्ठा, खण्ड-प्रथम, विषय - मैथिली, पत्र - प्रथम
प्राध्यापक - प्रवीण कुमार प्रभंजन (सं०प्रा०) मैथिली विभाग
अयनाचार्य रोसड़ा कॉलेज, रोसड़ा (समस्तीपुर)

पाठ्यांश — कंस बध

'कृष्णजन्म' महाकाव्य मे कंस बधक प्रसंग रोचक ढंगसँ वर्णन भेल अछि। अत्याचारी असुर कंसक अनाचारसँ सर्वसहा अत्यधिक व्यथित भऽ जाइत अछि, ओ अपन व्यथा-कथा लऽ जग पालनहार नारायण कहैत अछि। आ इहो कहि उठैत अछि जे ज्यों असुरक बध नहि करब तऽ हम पुनः रसातल डूबि जाएब। हमर कल्याण कऽ। पृथ्वीक आर्त प्रार्थना सुनि कृष्ण करुणानिधान कृपासिंधु अपन अवतारक सूचना दैत धैर्य धारण करबाक लेल कहैत छथि

द्रष्टव्य — "नाथ अनाथक सारंगपानी
सरण छिअ सरनागत जानी।
करुनामय कों करुना भेल
धैरज बहुत धरनि कों देल
धरनी किछु दिन धैरज धरब
हम अवतरब भार सब हरब ॥"

उपर्युक्त शास्त्रोचित ईश्वर वाणि सुनि प्रतिक्षाक घड़ी समाप्त होइत अछि आ कृष्ण भगवानक रूपमे जन्म अवतरण भऽ जाइत अछि। पूर्वक आकाशवाणी असुर राज कंसकेँ आतंकित कऽ दैत अछि। कंसक नियारल सभ योजन निष्फल भऽ जाइत अछि। अनाथक नाथ चक्रसुदर्शन चतुर्भुजधारी अपन लीला विस्तार जग कें देखबऽ लगैत छथि। बेरी, कारागार, यमुनापानि, फनिपाति, कन्याक अदलाबदली संग आनंदित वातावरण कौतुक सुनि कंस चैन छीना गेल अछि।

मथुराधिपति कंस द्वारा कतेको बेर कृष्णक मृत्युक योजना बनबैत अछि। एक सँ एक यत्न करैत अछि। पुतना कें पठबैत अछि। पुतनाक वक्षस्थलमे विषलेपित दूध कृष्ण कें पिलाओल गेल मुदा भगवान दूध पिबइत पुतनाक प्राण हरि लेलनि। दामोदर बनि जमला-अर्जुन कें उद्धार कयल। अत्यधिक उत्पात भेला पर नन्दबाबा गोकुल सँ बृन्दावन वास स्थान करलनि। कालिया नागके नाथलनि आ यमुना के स्वच्छ करलनि। गोवर्धन लीला करलनि। ई प्रसंग सुनि कऽ कंस कें दुर्मति सवार भऽ जाइत अछि। आकुल-व्याकुल कंस अपन प्राणहन्ता कें तत्क्षण बध करबाक लेल आतुर भऽ उठैत अछि। अक्रूर कें कृष्णक आमन्त्रण लऽ अनबाक लेल पठबैत छथि। मथुरा आयोजित कुश्तीमे भाग लेबाक लेल

कंस मामाक आमंत्रण कें (कृष्ण) स्वीकार करैत छथि आ गोकुल सँ मथुरा अबैत छथि। बलराम आ कृष्ण मथुरा भ्रमणक क्रम मे कुबुजा के अबजा बना देलनि जकर चर्चा यदुबीरक रूप मे सगर भऽ रहल अछि। कंसक शस्त्रागार कें देखल आ अजगय धनुक ध्वनि संकेत करलनि। कृष्ण आगमन सुनि कंस मुख्य द्वार पर कुबलयपीड़ हाथी सँ मरबा देबाक योजना बनाओल। प्रात भऽ ओ हाथी मारल गेल ई सुनि कंस अगिला योजना कें व्योंत कएल। कुश्तीक लेल पहलवान तैयार करल गेल। द्रष्टव्य –

"मोट मोट बाँहि लगओलक माटी
कुम्भकरनसँ छल नहि घाटी
कर बलदाप रोपल दुहु हाथ
आबि ललकारल कह व्रजनाथ ।।"

ई सुनि बलराम आ कृष्ण दुनु भार मुष्टिका प्रहार सँ आ केहुनक मारिसँ चारल पहलवानकें मारि देलनि। कंसक संग मल्ल युद्ध होइत अछि। कंसक भार सुदामा सेहो आबि जाइत अछि दुनु ओहि मल्लयुद्ध मे मारल जाइत अछि। युद्ध विनाशक करुण क्रंदनक कोलाहल सगरो मचि जाइत अछि। द्रष्टव्य–

"मुइल पाँच जन बाँचल आन
रंगभूमि भेल अति समसान
कंसक बहु भाबहु सब आइलि
कत करुना कर धरनि लोटाइलि
कारुन रोदन सबहुक सुनल
क्रिस्नक आँखि नोर दुहु भरल।"

उपर्युक्त कंस बध प्रसंग श्रीकृष्ण भगवानक मुखारविंद उच्चारित संकल्पक संदेश – "विनाशाय च दुष्कृताम् सम्भवामि युगे-युगे" मोहि भार (आ) जनकल्याणी-र्थी अवतार भऽ अत्याचारी कें बध करैत छथि। अधर्म आ अत्याचारक नाश अवश्य होइत अछि। ईश्वरीय सत्ता सर्वोपरी होइछ।

//